8

प्रकीर्ण समास प्रकरण

पूर्व शुरू के पाठों में केवलसमास, अव्ययीभावसमास, तत्पुरुष समास और द्वन्द समास वर्णित है। वहाँ समासपर्थालोचनाक सरपर पर ही समासान्त कार्यों विधायक सूत्रों और निषेधो सूत्रों का उल्लेख किया गया है। इस पाठ में सर्वसमास उपकारक जो समासान्त कार्यविधायक सूत्रों में उल्लेख किया गया है। और समासान्त कार्य निषेध सूत्रों का भी यहाँ संगृहित किया गया है।

इसके बाद पदविधित्व वृत्ति हो अतः वृत्ति क्या है यह जिज्ञासा होती है। इसके बाद वृत्तिस्वरूप उसके भेद और विग्रहस्वरूप उसके भेद का इस पाठ में वर्णन किया गया है। इसके बाद वृत्तियों में अन्यतम समास का संक्षेप स्वरूप को प्रतिपादन करके उसके भेदों का वर्णन किया गया है। इस पाठ में समासों का और समासान्त कार्यों का किस प्रकार महत्त्व भी इस पाठ में प्रतिपादित किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- सर्वसमासान्त विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- सर्वसमासान्त निषेध सूत्रों को जान पाने में;
- वृत्तिस्वरूप को जान पाने में;
- विग्रह स्वरूप को जान पाने में;
- वृत्ति भेदों और विग्रह भेदों को जान पाने में।

टिप्पणियाँ

- समास भेदों और उसके लक्षणों को जानिये?

अथ सर्वसमासों में उपकारक समासान्तकार्यविधायक सूत्रों की आलोचना की जानी चाहिए।

(8.1) ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे''

सूत्रार्थ–प्रक्षगाद्यन्त समास का अप्रत्यय अन्तावयव होता है (अक्षे या धूः) अक्ष में जो धू उसको नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अप्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में ऋक्पूरब्धूः पथाम् अ अनक्षे पदच्छेद है। यहाँ ऋक्पूरब्धूः पथाम् इस षष्ठी बहुवचनान्त पद है। अ लुप्त प्रथमा एकवचनान्त पद है। अनक्षे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। ऋक् च पूश्च आपश्च पूश्च पन्याश्च ऋक्पूरवधूः पन्थानः, तेषाम् ऋक्पूरवधूः पथाम् यह इतरेतरद्वन्दसमास है। न अक्षः अनक्षः, तस्मिन् अनक्षे इति नञ्तत्पुरुष समास है। यहाँ विवक्षा में सम्बन्ध अधिकरण में सप्तमी विभक्ति है। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। समास का अन्त समासान्त। ऋक्पूरवधूः पथाम् का विशेष्य से समास का यहाँ वचनविपरिणाम से समासानाम् पद होता है। इसके बाद ऋकपूरब्धूः पथाम् यहाँ तदन्तविधि में ऋगाद्यन्त समासों का अन्वय होता है। अनक्षे यह निषेध यद्यपि युक्त तथापि अन्यों के साथ निषेध असम्भव से धुर् से सम्बन्ध स्वीकृत किया जाता है। एवं सूत्र का अर्थ होता है–''ऋगाद्यत्त समास का अप्रत्यय अन्तावय होता है किन्तु अक्षशब्द विषय में धुरन्त धू अन्त वाले जो उससे नहीं होता है।

सूत्र में अनक्षे इस प्रतिषेध से अक्षशब्द से धुर का समास में समासान्त नहीं होता है। अक्षस्य धूः इस विग्रह में प्रक्रिया कार्य में अक्षधुर् होने पर अनक्षे इससे अप्रत्यय नहीं होता है। इसके बाद सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में अक्षधूः रूप बना।

उदाहरण–ऋक् शब्दान्त समास का समासान्त में उदाहरण है– अर्धर्चः। ऋचः अर्धम् इस लौकिक विग्रह में ऋच् ङस् अर्ध सु इस अलौकिक विग्रह में ''अर्धनपुंसकम्'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व होने से सु का लोप होने पर अध र्शब्द का पूर्वनिपात होने पर ''आद्गुणः'' सूत्र से अकार के स्थान पर और ऋकार के स्थान पर गुण होने पर रपत्व होने पर अर्धर्च होता है। इसके बाद प्रोक्त सूत्र से ऋगन्त के अर्धर्च शब्द का समासान्त अप्रत्यय होता है। इसके बाद अर्धर्च् अ होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न अध र्च शब्द का ''परवल्लिंङ्गद्वन्दतत्पुरुषोः'' इससे पर लिङ्गत्व प्राप्त होने पर ''अर्धर्चाः पुंसि च'' इस विकल्प से पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय होने पर अर्धर्यः रूप होता है। नपुंसक लिङ्ग में सु प्रत्यय होने पर अर्धर्चम् रूप बना।

पुर् शब्दान्त समास के समासान्त में उदाहरण है–विष्णोः पूः इस विग्रह में विष्णुपरम्। अप् शब्दान्त समास का समासान्त में उदाहरण है विमला आपो यस्थ वद् विमलापं सरः। धुरशब्दान्त समास का समासान्त में उदाहरण है राज्ञः घूः राजधुरा। पथिन् शब्दान्त समास का समासान्त में उदाहरण है–सख्युः पन्थाः सखिपथः।

(8.3) ''अच् प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः''

सूत्रार्थ–प्रति, अनु, अन पूर्वक सामलोभान्त से समास से समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में अच् प्रथमा एकवचनान्त पद है। प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः ये दो पद पञ्चमी एकवचनान्त पद है। प्रति अनु अव पूर्व से तात्पर्य प्रति, अनु, अव ये पूर्वपद है जिससे। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। समासात् का विशेषणत्व से तदन्तविधि में सामलोम्नः का सामलोमान्तात् यह अर्थ होता है। और सूत्र का अर्थ होता है–''प्रति, अनु, अव, पूर्वक सोमलोमन् समास से समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण–सामासान्त का समास के समासान्त में उदाहरण है–प्रतिसामम् प्रतिगमं साम इस लौकिक विग्रह में प्रति सामन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''कुगतिप्रादयः'' इस सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर प्रतिसामन् होता है। इसके बाद प्रोक्त सूत्र से प्रति पूर्वक सामान्त से प्रतिसामन् इस समास से अच् प्रत्यय होता है। अच् के चकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर प्रतिसामन् अ होता है। इसके बाद ''यचिभम्'' इससे पूर्व प्रतिसामन् की भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे टि का अन् लोप होने पर प्रति साम् अ होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न प्रतिसाय शब्द का ''परवल्लिङ्ग द्वन्द तत्पुरुषोः'' इससे पर लिङ्गत्व होने पर नपुंसक में सु प्रत्यय होने पर प्रतिसामम् रूप बना।

लोमान्त के समासान्त में अवलोमम् उदाहरण बना। अवहीनं लोमः यह अलौकिक विग्रह है।

(8.3) ''अक्ष्णोऽदर्शनात्''

सूत्रार्थ–अच क्षु परि से अक्ष्ण समासान्त तद्धित संज्ञक को अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में अक्ष्णः अदर्शनात् यह पदच्छेद है। यहाँ अक्ष्णः इति अदर्शनात् च दो पद पञ्चमी एकवचनान्त है। ''अच् प्रत्यन्नव पूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र से अच् पद की अनुवृत्ति होती है। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''परश्चः'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकार सूत्र अधिकृत है। अर्थात् इन चारों का अधिकार है। दृश्यते अनेन इति दर्शनम् पद में करण में ल्युट् प्रत्यय है। नेत्र अर्थ है। न दर्शनम्, अदर्शनम्, तस्मात् अदर्शनात् इति नञ्तत्पुरुष समास है। नेत्रवाचिभिन्न से तात्पर्य अचक्षु पर्याय से है। समासस्यान्तः समासान्त (समास का अन्त समासान्त है) समास के इस अन्वय से विभक्ति विरिणाम तदन्तविधि में अचक्षुः पर्यायान्तस्य समासस्य प्राप्त होता है। एवं सूत्रार्थ होता है–''अचक्षुः पर्याय से अक्षिशब्द से समासान्त तद्धितसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

उदाहरण—इस सूत्र का उदाहरण है गवाक्षः। गवाम् अक्षि इव इति लौकिक विग्रह में गो आम् अक्षि सु इस अलौकिक विग्रह में ''षष्ठी'' से सूत्र से गो आम् इस षष्ठयन्त अक्षि सु सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर गो अक्षि इस स्थिति में ''ङिच्च'' इस परिभाषा से परिष्कृत ''अवङ्स्फोटायनस्य'' इससे गो शब्द के ओकार का अवङ् आदेश होने पर अनुबन्धलोप होने पर ग् अव अक्षि होता है। इसके बाद दोनों अकारों के स्थान पर सवर्णदीर्घ आकार होने पर गवाक्षि अ होता है। तब गवाक्षिशब्द का ''यचिभम्'' सूत्र से भसंज्ञा होने पर ''यस्येति च'' इससे इकार का लोप होने पर सर्वसंयोग में निष्पन्न गवाक्षशब्द स लोकप्रसिद्धत्व से पुल्लिंग में विद्यमान सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में गवाक्षः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र से क्या विधान है?
2. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
3. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र का उदाहरण है?
4. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस सूत्र में अनक्षे पद का क्यों है?
5. ''अच् प्रत्यन्नवपूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र से क्या विधान है?
6. ''अच् प्रत्यन्नवपूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
7. ''अच् प्रत्यन्नवपूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
8. ''अक्ष्णोऽदर्शनात्'' इस सूत्र से क्या विधान है?
9. ''अक्ष्णोऽदर्शनात्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
10. ''अक्ष्णोऽदर्शनात्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है।

(8.4) ''उपसर्गादध्वनः''

सूत्रार्थ—प्र आदि अध्वन् (भार्गवाची) से समासान्त तद्धिकसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या—यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अच् प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में उपसर्गाद् अध्वनः यह पदच्छोद है। यहाँ ''उपसर्गाद्'', ''अध्वनः'' ये दो पद पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''अच्प्रत्यन्ववपूर्वात् सामलोम्नः'' इस सूत्र से अच् पद की अनुवृत्ति आती है। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। उपसर्गपद से प्रादि का ग्रहण किया जाता है। एवं सूत्र का अर्थ होता है ''प्र आदि पूर्वक अध्वन्नन्त समास से समासान्त तद्धिकसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।''

उदाहरण—इस सूत्र का उदाहरण है प्राध्वो रथः। प्रगतः अध्वानम् इस लौकिक विग्रह में

प्र अध्वन् अम् इस अलौकिक विग्रह में अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इस वार्तिक से प्रादितत्पुरुष समास होता है। इसके बाद समास के प्रातिपदिकत्व होने पर सुप् का लोप होने पर प्रअध्वन् इस स्थिति में दो अकारों के स्थान पर सवर्णदीर्घ में आकार होने पर प्राध्वन् निष्पन्न होता है। प्राध्वन्शब्द का ''यचिभम्'' से भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे भसंज्ञक प्राध्व-शब्द के टि के अन् का लोप होने पर प्राध्व् अ होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न प्राध्वशब्द से पुल्लिंग में सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में प्राध्वः रूप बना।

समासान्तकार्यो के निषेधसूत्र नीचे दिये जा रहे हैं?

(8.5) ''न पूजनात्'' (4.8.69)

सूत्रार्थ–पूजन अर्थ से पर जो प्रातिपदिक है उससे समास से समासान्त नहीं होते है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त का निषेध का निधान है। द्विपदात्मक इस सूत्र में ''न'' अव्यय पद है और पूजनात् यह पञ्चमी एकवचनान्त रूप है। सूत्र में ''प्रत्ययः'', ''ङ्याप्प्रातिपदिकात्'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। पूजन शब्द से पूजनार्थक का ग्रहण किया गया है। पूजनात् और प्रातिपदिकात् को अन्वयव है। उससे पूजन अर्थ परे जो प्रातिपदिक तस्मात् प्राप्त होता है। समास का अन्त समासान्त समास पद से अन्वय से प्रातिपदिकातात् समासात् प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ होता है–पूजनार्थ से पर जो प्रातिपदिक है उस तदन्त समासान्त का नहीं होता है। ''स्वातिभ्यामेत'' से ही भाष्य बल से सु अति इन दोनों उपसर्गों का पूजन अर्थ का ही ग्रहण किया गया है। इष्टि नाम इच्छसप्रतिपादक वचन है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है खुराजा। सुशोभनो राजा इस लौकिक विग्रह में सुशोभन सु राजन सु इस लौकिक विग्रह में ''कुगतिप्रदयः'' इस सूत्र से प्रादि तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर सु राजन निष्पन्न होता है। सुराजन् से ''राजाहः सखि भ्यष्टच्'' इससे टच् प्राप्त होता है। परन्तु सुराजन् यहाँ सु प्रत्यय पूजनार्थक है। एवं सुराजन् का पूजनार्थ पूर्वपदकत्व से प्रोक्त सूत्र से टच् प्रत्यय का निषेध होने पर सुराजन् होता है। इसके बाद सुराजन् से पुल्लिंग का लोप होने पर सुप्रत्यय में प्रक्रियाकार्य में सुराजा रूप बना।

इसी प्रकार अतिशयितो राजा अतिराजा यहाँ पर न समासान्त प्रत्यय है।

(8.6) ''किमः क्षेपे''

सूत्रार्थ–निन्दा अर्थक किं शब्द से परे जो प्रातिपदिक तदन्त समास से समासान्त नहीं होते हैं।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त निषेध होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में किमः पञ्चमी एकवचनान्त रूप है। क्षेपे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। सूत्र में ''प्रत्ययः'',

टिप्पणियाँ

''ङ्याप्प्रातिपिदकात्'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र है। क्षेप नाम निन्दा का है। किम् का प्रातिपदिक से अन्वय होता है। उससे पूजनार्थ से परे जो प्रातिपदिकान्तात् समासात् पद प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ है। ''निन्दार्थक किं शब्द से परे जो प्रातिपदिक है उस समास से समासान्त नहीं होते हैं।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है किं राजा। कुत्सितो राजा इस लौकिक विग्रह में किम् सु राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''किं क्षेपे'' इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इसके बाद किम् का पूर्वनिपात होने पर समास के प्रातिपदिकत्व से सुप का लोप होने पर किंराजन् होता है। किंराजन् से ''राजाह: सखिभ्यष्टच्

इससे टच् प्राप्त होने पर किं पूर्व पद से प्रोक्त सूत्र से उसका निषेध होने पर किंराजन् होता है। किंराजन् से पुल्लिंग में सु प्रत्यय होने पर किंराजा रूप बना।

(8.7) ''नञस्तत्पुरुषात्'' (4.8.69)

सूत्रार्थ–नञ् तत्पुरुष समास से समासान्त नहीं होते हैं।

सूत्रव्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त निषेध होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में नञ: तत्पुरुषात् से दो पद पञ्चमी एकवचनान्त है। इस सूत्र में ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। एवं सूत्रार्थ होता है–''नञ् तत्पुरुष समास से समासान्त नहीं होते हैं।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अराजा। न राजा इस लौकिक विग्रह में न राजन् सु इस अलौकिक विग्रगह में ''नञ्'' सूत्र से तत्पुरुष समास होने पर प्रातिपदिक से सुप् का लोप होने पर न लोपे अराजन् शब्द निष्पन्न होता है। अराजन् इससे ''राजाह: सखिभ्यष्टच्'' इस टच् प्रत्यय प्राप्त होने पर नञ्तत्पुरुष से प्रोक्त सूत्र से उसका निषेध होने पर अराजन् से पुल्लिंङ्ग में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में अराजा रूप बना।

(8.8) ''पथोविभाषा'' (5.4.72)

सूत्रार्थ–पथिन् शब्द से नञ् तत्पुरुष समास से विकल्प से समास नहीं होते हैं।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त का निषेध होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में ''पथ:'' पञ्चमी एकवचनान्त पद है। ''विभाषा'' विकल्प बोधक अव्यय पद है। इस सूत्र में ''प्रत्यय:'', ''परश्च'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''नञस्तत्पुरुषात्'' सूत्र की अनुवृत्ति आती है। पथिन शब्द का तत्पुरुषात् इत्यादि अन्वय से तदन्तविधि में पथिन् शब्द से तत्पुरुषात् पद प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ होता है–''पथिन् शब्द से नञ्तत्पुरुष समास से विकल्प से समासान्त नहीं होते हैं।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है अपन्था:। न पन्था: इस लौकिक विग्रह में न पथिन् सु इस अलौकिक विग्रह में ''नञ्'' सूत्र से तत्पुरुष समास होने पर, प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप

होने पर न लोप अपथिन् निष्पन्न होता है। अरापथिन् से ''ऋक्पूरब् धू: पथामानक्षे'' इससे अच् प्रत्यय प्राप्त होने पर पथिन शब्दान्त नञ्तत्पुरुष से प्रोक्त सूत्र से विकल्प से निषेध होने पर अपथिन् से पुल्लिंग में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में अपन्था: रूप होता है। निषेध के विकल्पता से उसके अभाव में अच् प्रत्यय होने पर अपथिन् अ इस स्थिति में, भसंज्ञक के टि (अन्) का लोप होने पर निष्पन्न अपथशब्द का ''पथ: संख्याव्ययादे:'' इससे नपुंसक होने पर सु प्रत्यय होने पर अपथम् रूप बना।

पाठगत प्रश्न-2

11. ''उपसर्गादध्वन:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है।
12. ''उपसर्गादध्वन:'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है।
13. ''न पूजनात्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
14. ''न पूजनात्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
15. ''किम: क्षेपे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
16. ''किम: क्षेपे'' इस सूत्र का उदाहरण है?
17. ''नञस्तत्पुरुषात्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
18. ''नञस्तत्पुरुषात्'' इस सूत्र का क्या उदाहरण है?
19. ''पथो विभाषा'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
20. ''पथो विभाषा'' इस सूत्र का क्या उदहारण है?

(8.1) वृत्तिस्वरूपम्, तद्भेदाश्च''

(वृत्ति का स्वरूप और उसके भेद)

''समर्थ: पदविधि:'' इस सूत्र में पद विधि: नाम पदसम्बन्धी विधि है। अर्थात् पदोद्देरथकविधि : है। पद्दोद्देश्यक विधित्व वृत्ति का नाम है। वृत्ति नाम किसका है? प्रश्न उत्पन्न होता है। इस प्रसंग में सिद्धान्त कौमुदी में भहोजिदीक्षित ने कहा है–वृत्ति पाँच प्रकार की होती है।

(1) कृन्तद्धित

(2) समास

(3) एकशेष

(4) सनाद्यन्त

(5) धातुरूप

टिप्पणियाँ

परार्थाभिधानं वृत्ति। पर अर्थ नाम को वृत्ति कहते है? ''परार्थाभिधानं वृत्तिः'' वृत्ति लक्षण है। परार्थ अभिधान परार्थाभिधान सृ षष्ठी तत्पुरुष समास है। ''अभिधानम्'' करण में ल्युट् प्रत्यय होता है। परार्थ नाम विग्रह वाक्य अवयव पदार्थों से पर जो अर्थ है वह परार्थ उस प्रातिपदिक वृत्ति होती है। अर्थात् विग्रह वाक्यों में जो पद हैं उनमें उनका अर्थ होता है, उसकाभिन्न विशिष्ट एक अर्थ की वृत्ति प्रातिपदिक होता है। एवं विग्रह वाक्य अवयव पदार्थों से पर अन्य जो विशिष्ट अर्थ है वह प्रातिपदिक वृत्ति है। अर्थात् प्रक्रिया दशा में प्रत्येक अर्थवत्व से प्रथम विगृहीता पदों समुदाय शक्ति से विशिष्टार्थप्रातिपदिक वृत्ति है। अर्थात् विग्रह वाक्यों में जो पद हैं उनमें अर्थ होते हैं उसके भिन्न का विशिष्टो से एकार्थ का प्रातिपदिका वृत्ति होती है। एवं विग्रह वाक्य अवयव पदार्थों से परे अन्य जो विशिष्ट का अर्थ प्रतिपादिका वृत्ति है। अर्थात् प्रक्रिया दशा में प्रत्येक अर्थवत्व् से प्रथमविगृहीत पदों का समुदाय शक्ति से विशिष्ट एकार्थक प्रतिपादिक वृत्ति है। समुदायशक्ति नाम एकार्थीभाव सामर्थ्यम् है। एवं एकार्थीभावसामर्थ्य विशिष्ट वृत्ति विशिष्ट अर्थ प्रतिपदान होता है।

वृत्ति के पञ्च भेद है–कृदन्तविधिः तद्धितान्तवृत्ति, समास वृत्तिः, एकशेष वृत्ति, सनाद्यन्तवृत्ति। वहाँ समास वृत्ति में जैसेः–''वृत्तिलक्षणसङ्गमनम्'' जैसेः–राज्ञः पुरुषः यहाँ पर राज्ञः इस पद का राजसम्बन्धी अर्थ है। पुरुषःपद का अर्थ है पुरुष। यहाँ समासवृत्ति में राजपुरुष निष्पन्न होता है। राजपुरुष पद का अर्थ होता है राजविशिष्ट पुरुष।

(8.2) ''विग्रहवाक्यसवरूपम्, तद्भेदाश्च

(विग्रह वाक्य स्वरूप और उसके भेद)

वृत्तिलक्षणावसर पर परार्थ नाम क्या है ऐसा पूछने पर विग्रह वाक्य अवयवपदार्थों से परे जो अर्थ होता है वह परार्थ होता है ऐसा कहा गया है। तब विग्रह क्या होता है ऐसा प्रश्न पैदा होता है। वह दो प्रकार का होता है। लौकिक और अलौकिक। परिनिष्ठतत्व से साधुः लौकिक विग्रह होता है। प्रयोगा अहो असाधुरलौकिक विग्रह है।

''वृत्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः'' यह विग्रह का लक्षण है। वृत्ति अर्थ का अवबोधक जो वाक्य है वही विग्रह है। जैसेः–राजपुरुषः इस समास वृत्ति में राज्ञः पुरुषः यह वाक्य तदर्थबोधक है। अतः वह विग्रह कहलाता है। और वह विग्रह लौकिक और अलौकिक दो प्रकार से विभक्त होता है।

वहाँ लौकिक विग्रह परिनिष्ठित होता है। परिनिष्ठित माम (व्याकरण संस्कृत) संस्कृत व्याकरण का है। व्याकरण से संस्कृतों में ही पदों का प्रयोग अर्हत्व से लोक में साधुत्व (सम्यक) होता है। एवं ''परिनिष्ठितत्वात् साधुलौकिकः'' यह लौकिक विग्रह वाक्य लक्षण है। लौकिक नाम लोक में प्रयोग होने का है। अलौकिक नाम लोक में प्रयोग नहीं होने से नहीं है। अर्थात् परिनिष्ठिततत्व के अभाव में जो विग्रह लोक में प्रयोग नहीं होता है वह अलौकिक विग्रह है। एवं ''प्रयोगानर्हः असाधुरलौकिकः'' यह अलौकि विग्रह वाक्य लक्षण है।

यथा उदाहरणः–समास में राजपुरुषः। राजः पुरुषः इस लौकिक विग्रह वाक्य का व्याकरण

संस्कृतत्व से लोक में प्रयोग होता है यहाँ राजन् ङस् पुरुष सु इस अलौकिक विग्रह वाक्य में। इस वाक्य का संस्कृत व्याकरणत्व के अभाव से लोक में प्रयोग नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न-3

21. वृत्ति का लक्षण क्या है?

22. वृत्ति के कितने भेद हैं?

23. विग्रह नाम किसका है?

24. विग्रह के कितने भेद और वे कौन से हैं?

25. उदाहरण सहित लौकिक विग्रह का लक्षण लिखो?

26. उदाहरण सहित अलौकिक विग्रह का लक्षण लिखो?

(8.3) समास भेदाः

(समास के भेद)

समास दो प्रकार का होता है।

(1) नित्य

(2) अनित्य

अविग्रह अथवा अस्वपद विग्रह नित्य समास होता है। नास्ति विग्रहो यस्य सः अविग्रहः (नहीं है। विग्रह जिसका अविग्रह है) यहाँ विग्रह पद से लौकिक विग्रह स्वीकृत किया गया है। एवं लौकिक विग्रह वाक्य रहित नित्य समास है। नहीं है अपने पदों से विग्रह जिसका वह अस्वपद विग्रह है। समस्यमान अपने पदों से विग्रह वह समास नित्य समास होता है।

अविग्रह नित्यसमास का उदाहरण है–कृष्णसर्पः। यहाँ कृष्णः च असौ सर्पः च इति (कृष्ण है जो सर्प) काला है जो साँप इस लौकिक विग्रह में सर्पजाति विशेष वाचक बोध के अभाव से कृष्ण सर्पः अविग्रह नित्य समास है। अस्वपदविग्रह का नित्य समास का उदाहरण जैसेः–कुपुरुषः। कुत्सितः च असौ पुरुषः च इस लौकिक विग्रह है। समास में प्रयुज्यमान कु पदका अर्थ बोध के लिए लौकिक विग्रह में कुत्सितः पद का प्रयोग आदि समास अस्वपदविग्रह नित्य समास है।

स्वपदविग्रह होता है अनित्य समास। स्व से समस्यमान पदों से विग्रह जिसका है वह स्वपद विग्रह है। अर्थात् जिस समास में समासयुक्त पदों से ही विग्रह वाक्य निर्मित किया गया है वह स्वपदविग्रहः समास होता है। वह अनित्य होता है। जैसेः–पीतम् अम्बरं यस्य स (पीला है) वस्त्र जिसका वह पीताम्बर है। यहाँ पीतशब्द से और अम्बर शब्द से समस्यमान से ही विग्रह के दर्शन से यह अनित्य समास है।

टिप्पणियाँ

समास के कितने भेद होते हैं यहाँ बहुत सी विप्रतिपत्तियाँ हैं। सामान्यतः समास के पाँच भेद होते हैं यह कह सकते हैं और वे है–केवल समास, अव्ययीभावसमास, तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहि समास और द्वन्द समास होता है।

(8.3.1) केवल समास

अव्ययीभाव आदि विशेष संज्ञाओं से विनिर्मुक्त जो समास है वह केवल समास होता है। समास प्रकरण में विद्यमान समासविधायक सूत्रों द्वारा समास होता है। सूत्र से क्वचित् समास होता है परन्तु उस समास की विशेषसंज्ञा नहीं की जाती है। वह समास केवलसमास कहा जाता है। विशेष संज्ञायें में होती हैं- अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द और बहुव्रीहि। इस समास का सुप्सुपासमास यह नामान्तरण है। ''सह सुपा'' इस सूत्र को ''इवेन सह समासो विभक्त्यलोपश्च'' यह वार्तिक इस समास का विधायक है। भूतपूर्वः वागर्थाविव इत्यादि इस समास का उदाहरण है।

(8.3.2) अव्ययी भाव समास

''प्राय पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः'' यह अव्ययीभाव समास का लक्षण है। पूर्वपद का अर्थ है पूर्वपदार्थः। पूर्व पद का अर्थ प्रधान हो जहाँ यह पूर्वपदार्थ प्रधान ही बहुव्रीहि समास है। इस समास में प्राय पूर्वपदार्थ का ही प्राधान्य है। दिखाई देता है। अव्ययीभाव यह अन्वर्था संज्ञा है। अनव्यय अव्यय होता है। अव्ययीभाव है। ''अव्ययीभावः'' यह अधिकृत विहित समास अव्ययीभाव ''संज्ञक होता है। इस सूत्र से ''तत्पुरुष'' इस सूत्र से पहले तक जो सूत्र हैं उनसे विहित समास अव्ययीभावसंज्ञक होता है।

अव्ययीभावसमास के पाठ में इस समास के विधायक पाँच सूत्र सन्निविष्ट किये है। वे होते हैं–''अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि-व्यद्ध्यर्याभावाऽत्ययाऽसम्प्रति-शब्द प्रादुर्भाव-पश्चाद्-यथाऽऽनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्याऽन्तवचनेषु'', ''यावदवधारणे'', ''सुप्प्रतिना मात्रार्थे'', ''संख्या वश्येन'', ''नदीभिश्च''। यहाँ ''अव्ययविभक्ति...'' इस सूत्र के अधिहरि, उपकृष्णम्, समुद्रम्, दुर्यवनम् उदाहरण हैं। ''यावदवधारणे'' इस सूत्र का यावच्छलोकम् उदाहरण है।'' सुप्प्रतिनायात्रार्थे'' इस सूत्र का रूप् प्रति ''संख्यावेश्येन'' इस सूत्र का उदाहरण है–एकविंशतिभारद्धाजम्। ''नदीभिश्च'' इस सूत्र का उदाहरण है पञ्चगङ्गम्।

अव्ययीभाव समास में पूर्वपदार्थप्राधान्य दिखाई देता है। जैसेः–अधिहरि। हरौ इस लौकिक विग्रह में हरि ङि अधि इस अलौकिक विग्रह में अधिहरि रूप निष्पन्न होता है। अधिहरि यहाँ अव्ययीभाव समास में अधि पूर्वपद है। यहाँ पूर्वपद का अधिकरण अर्थ के प्राधान्य से अधि हरि पूर्वपदार्थ प्रधान है।

परन्तु **सूपप्रति** यहाँ पूर्वपदार्थप्राधान्य का व्यभिचार है। ''सुप्प्रतिना यात्रार्थे'' इस सूत्र से सूप के लेश लौकिक विग्रह में समास में सूपप्रति रूप निष्पन्न होता है। सूपप्रति यहाँ प्रति मात्राबोधक

है। वस्तुत: यहाँ मात्रार्थ के उत्तरपद का ही प्राधान्य है और पूर्वपदार्थ का अप्राधान्य है। अत कहा गया है–प्राय पूर्वपदार्थ प्रधान अव्ययीभाव समास होता है।

''समासान्ता:'' ये अधिकृत करके कुछ समासान्त प्रत्यय होते हैं। और वे प्रत्यय है ''तद्धिता:'' इस अधिकार बल से तद्धितसंज्ञक होते हैं। यहाँ अल्ययीभाव समास का पाठ में टच् प्रत्यय विध ायक चार सूत्रों का उल्लेख किया गया है। उनमें ''अव्ययीभावेशरत्प्रभृतिभ्य:'', ''अनश्च'' ये दो सूत्र नित्य टच् प्रत्यय विधायक सूत्र है। यहाँ यथाक्रमम्, उपशरदम्, अध्यात्मम्, इत्यादि सूत्र हैं। ''नपुंसकादन्यतरस्थाम्--, ''झय:'' ये दो सूत्र विकल्प से टच् प्रत्यय विधायक है। यहाँ पर क्रमानुसार (यथाक्रम) उपचर्म, उपचर्मम् उपसभिधम् उपसमित् इत्यादि उदाहरण हैं।

अव्ययीभाव समास निष्पन्न शब्द का ''अव्ययीभाव:'' से नपुंसकत्व होता है। उससे ''ह्रस्वोनपुंसके प्रातिपदिकस्य'' इस सूत्र से नपुंसक का ह्रस्व होता है। अव्ययीभाव समास का ''अव्ययीभावश्च'' इस सूत्र से अव्यय संज्ञा होती है। अव्ययसंज्ञा होने पर ''अव्ययादाप्सुप:'' इससे सुप् का लुक् प्राप्त होता है। जब अव्ययीभावसमास निष्पन्न शब्द अकारान्त होता है तब विशेषकार्य होता है। तब ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्या'' अदन्त अव्ययीभाव से परे सुप् का ''अव्ययादाप्सुप:'' इससे लोप निषेध होता है। किन्तु पञ्चमी के बिना सुप् के स्थान पर अमादेश होता है। ''तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्'' इस सूत्र से अदत्त अव्ययीभाव से तृतीया में और सप्तमी में बहुलम् सु प्रत्यय को अम् आदेश होता है। उससे उपकृष्णम् उपकृष्णेन।

पाठगत प्रश्न-4

27. नित्यसमास का लक्षण क्या है?
28. नित्यसमास के दोनों पक्षों में उदाहरण दिखाइये?
29. समास के सामान्यत: कितने भेद हैं?
30. केवलसमास का लक्षण क्या है?
31. विशेष संज्ञा क्या है?
32. अव्ययीभावसमास का लक्षण क्या है?
33. अव्ययीभावसमास के लक्षण में प्रायेण पद किसलिए ग्रहण किया गया है?
34. अव्ययीभावसमास में समासान्त टच् प्रत्ययों के विधायक सूत्र कौन से हैं?
35. अव्ययीभावसमास में अमादेश विधायक दो सूत्र कौन से हैं?

(8.3.4) ''तत्पुरुषसमास''

प्रायेण उत्तर पदार्थ प्रधान: तत्पुरुष:। (प्राय उत्तर पदार्थ प्रधान तत्पुरुष समास कहलाता है) उत्तरपद का अर्थ होता है पूर्वपदार्थ। उत्तरपदार्थ प्रधान हर जहाँ प्रधान वह उत्तरपदार्थप्रधान

टिप्पणियाँ

बहुव्रीहि समास होता है। समास में प्राय उत्तर पदार्थ का प्राधान्य दिखाई देता है। ''तत्पुरुषः'' यह अधिकृत विहित समास तत्पुरुषसांक होता है। इस सूत्र से ''शेषो बहुव्रीहिः'' से पहले तक जो सूत्र हैं उनसे विहित समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

इस समास का उदाहरण है–कृष्णश्रितः। कृष्णश्रितः यहाँ समास में श्रितः उत्तरपद है। उस अर्थ के प्राधान्य से और उत्तरपदार्थ प्राधान्य से यह समास उत्तरपदार्थ प्रधान तत्पुरुष समास होता है।

तत्पुरुष समास के बहुत से भेद होते हैं। समानाधिकरण और व्यधिकरण ये दो भेद होते हैं ऐसा कह सकते हैं। यहां पर न्यधिकरणतत्पुरुष का द्वितीयातत्पुरुष, तृतीयातत्पुरुष, चतुर्थीतत्पुरुष, पञ्चमी तत्पुरुष, षष्ठीतत्पुरुष और सप्तमीतत्पुरुष से छः भेद होते हैं। समानाधिकरण तत्पुरुष नाम कर्मधारय समास का है। अन्यथा भी सामान्यतः कर्मधारय, द्विगु, नञ आदि चार भेद कह सकते हैं।

यहाँ द्वितीयादि सप्तमी तत्पुरुष सामान्य हैं। तत्पुरुष पाठ में सामान्यतत्पुरुष विधायक आठ सूत्र उल्लेखित हैं। द्वितीया तत्पुरुष का ''द्वितीयाश्रिताहीतपतितगतात्यस्त प्राप्तापन्नैः'' यह विधायक सूत्र है। कृष्णश्रितः दुःखातीतः इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण हैं। तृतीया तत्पुरुष का ''तृतीयातत्कृतार्थेन गुणवचनेन'', ''कर्त्तकरणेकृता बहुलम्'' ये दो विधायक सूत्र हैं। शङ्कुलाखण्डः नखभिन्नः इत्यादि क्रमानुसार उदाहरण है। चतुर्थीतत्पुरुष का ''चतुर्थीतदथार्थबलि हित सुख रक्षितैः'' यह विधायक सूत्र है। यूपदारु द्विजार्थः सुपः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। पञ्चमीतत्पुरुष का ''पञ्चमीभयेन'' और ''स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि क्तेन'' ये दो विधायक सूत्र हैं। चोरमयम् इत्यादि यहां उदाहरण है। षष्ठीतत्पुरुष समास का ''षष्ठी'' यह विधायक सूत्र है। राजपुरुषः यहाँ उदाहरण है। सप्तमी तत्पुरुष का ''सप्तमी शौण्डैः'' विधायक सूत्र है। इस सूत्र का उदाहरण है अक्षशौण्डः। किन्तु षष्ठी समास निषेध सात सूत्र हैं। ''न निर्धारणे'', ''पूरणगुणमुहितार्थसदव्ययतव्य-समानाधिकरवेन'' ''क्वेन च पूजायाम्'', ''अधिकरणवाचिना च'', ''कर्मणि च'', ''तृजकाभ्यां कर्तरि'' और ''कर्त्तरि च''। षष्ठी समास का अपवादभूत दो सूत्र हैं–''पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे'' और ''अर्धं नपुंसकम्''। यहाँ पूर्वकायः, अध र्पिप्पली क्रम अनुसार उदाहरण हैं।

समान विभक्ति पदों का जब तत्पुरुषसमास होता है तब कर्मधारय संज्ञा होती है। यहाँ ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' यह सूत्र प्रमाण है। समानाधिकरण तत्पुरुष विधायक तत्पुरुष समास का पाठ में नौ सूत्र संग्रहित हैं। वे हैं–''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'', ''कुत्सितानि कुत्सचैः'', ''पापाणके कुत्सितैः'', ''उपमानानि सामान्य वचनैः'', ''उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्या प्रयोगे'', ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानै'', ''वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम्'' ''किं क्षेपे'', ''प्रशंसावचनैश्च''। इन सूत्रों के यथाक्रम उदाहरण हैं– नीलोत्पलम्, वैयाकरणखसूचिः, ''पापनापितः'', ''घनश्यामः'', ''पुरुषव्याघ्रः'', ''सद्वैद्यः'', ''गोवृन्दारकः'', ''किंराजा गोतल्लजः''। यहाँ ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्'' वार्तिक भी पढ़ा गया है। इसका उदाहरण है शाकपार्थिवः। इन सूत्रों से और वार्तिक से विधीयमान तत्पुरुष का समानाधिकरण से कर्मधारय संज्ञा होती है। एवं कर्मधारय का विशेषणपूर्वपद, विशेषणोत्तरपद, उपमानपूर्वपद, उपमानोत्तरपद, इत्यादि का अनात्तरभेदों की कल्पना कर सकते हैं।

तत्पुरुष का तृतीय भेद है द्विगुः। ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' इस सूत्र से विहित संख्यापूर्व

तत्पुरुष समासः द्विगु संज्ञा प्राप्त होता है। यहाँ प्रमाण ''संख्यापूर्वोद्विगुः'' है। द्विगु समास तीन प्रकार का होता है। समाहार द्विगु, तद्धितार्थ द्विगु और उत्तरपद द्विगु। यहाँ समाहार द्विगु का उदाहरण है-पञ्चगवम्। तद्धितार्थ द्विगु का उदाहरण है पौर्वशालः। और उत्तरपद द्विगु का उदाहरण है पञ्चगवधनः। ''द्वन्दतत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्य समास वचनम्'', ''गोरतद्धितलुकि'' इस सूत्र वार्तिक में द्विगुसमास का रूप निष्पादन में उपयोगी है।

नञ् आदि समास पाँच होते हैं। नञ्तत्पुरुष, कुतत्पुरुष, गतितत्पुरुष, प्रादितत्पुरुष और उपपदतत्पुरुष है। ''नञ्'' नञ्तत्पुरुषविधायक सूत्र है। इसका उदाहरण है। अब्राह्मणः। कुतत्पुरुष, गतितत्पुरुषः और प्रादितत्पुरुषः ''कुगतिप्रादयः'' सूत्र से विधान होता है। यहाँ कुपुरुषः, ऊरीकृत्य, सुपुरुषः इत्यादि यथाक्रम उदाहरण हैं। प्रादि समास विधायक पांच वार्तिक भी यहाँ उल्लेखित किये गये हैं-''प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया'', ''अल्यादयः क्रात्ताद्यर्थे द्वितीयया'', ''अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'', ''पर्यादयो ग्लानायर्थे चतुर्थ्या'', ''निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या''। प्राचार्यः, अतिपालः, अवकोकिलः, पर्यध्ययनः, निष्कौशाम्बिः इत्यादि इन वार्तिक का क्रम से उदाहरण हैं। ''उपपदमतिङ्'' यह उपपदतत्पुरुष विधायक सूत्र है। यहाँ कुम्भकारः इत्यादि उदाहरण है।

तत्पुरुषसमास में ''समासान्ताः'' इससे अधिकृत कुछ समासान्त प्रत्ययों का विधान किये जाते हैं। और वे प्रत्यय हैं ''तद्धिताः'' इस अधिकारबल से तद्धित संज्ञक होते हैं। यहाँ तत्पुरुष समास का पाठ में अच् प्रत्यय विधायक ''तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः'' और ''अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः'' इन दो सूत्रों का उल्लेख किया गया है। यहाँ द्व्यङ्गुलम्, सर्वरात्रः इत्यादि क्रम अनुसार उदाहरण हैं। यहाँ ''राजाहःसखिभ्यष्टच्'' टच् विधायक सूत्र हैं। यहाँ ''रात्राह्नाहाः पुंसि'', ''परवल्लिङ्गंद्वन्दतत्पुरुषयोः'', ''अर्धर्चाः पुंसि च'' इत्यादि लिङ्गानुशासनपरक सूत्र हैं। यहाँ अहोरात्रः, राजपुत्रः, अर्धर्चः इत्यादि क्रमानुसार उदाहरण हैं।

पाठगत प्रश्न-5

36. ''तत्पुरुष समास का लक्षण क्या है?

37. तत्पुरुषसमासलक्षण में प्रायेण पद किसलिए लिया गया है।

38. व्यधिकरणतत्पुरुष के कितने भेद हैं?

39. समानाविकरण तत्पुरुष की कौन संज्ञा और किस सूत्र से होती है।

40. द्विगु संज्ञा किसकी और किस सूत्र से होती है?

41. प्रादितत्पुरुष समास विधायक वार्तिक कौन से हैं?

42. प्रादितत्पुरुष समास विधायक वार्तिक कौन से हैं?

43. परमराजः यहाँ पर टच् प्रत्यय किस सूत्र से होता है।

टिप्पणियाँ

(8.3.5) बहुव्रीहि समास

''प्रायेण अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः'' यह बहुव्रीहि का सामान्य लक्षण है। अन्य पद का अर्थ अन्य पदार्थ होता है। समस्यमान पदार्थपेक्षता से मित्र पदार्थ अन्यपदार्थ होता है। अन्य पदार्थ है प्रधान जहाँ वह अन्यपदार्थ प्रधान है। इस समास में प्राय अन्यपदार्थ का प्राधान्य दिखाई देता है। ''शेषो बहुव्रीहिः'' यह अधिकृत करके विहित समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है। इस सूत्र से ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से पहले तक जो सूत्र हैं उनसे विहित समास बहुव्रीहि संज्ञक होता है।

इस समास का उदाहरण है–पीताम्बरः।

पीताम्बर यहाँ समस्यमान पीतम् अम्बर दो पद हैं। पीताम्बररूप समस्यमान पदों की अर्थ अपेक्षा से अन्यपदार्थ विष्णु रूप होता है। उस अन्य पदार्थ विष्णु की प्राधान्यता से यह समास अन्यपदार्थ प्रधान बहुव्रीहि समास होता है।

परन्तु यहाँ अन्य पदार्थ प्राधान्य का व्यभिचार दो और तीन रूप हैं। ''संख्ययाव्ययासन्नदूराधिकसंख्याः संख्येये'' इस सूत्र से द्वौ च त्रयः च इस लौकिक विग्रह में समास होने पर द्वित्राः रूप निष्पन्न होते हैं। द्वित्राः यहाँ उन्नयपदार्थ का प्राधान्य है। और अन्य पदार्थ का प्राधान्यभाव है। अतः कहा जाता है ''प्रायेण अन्यपदार्थ प्रधान बहुव्रीहि समास होता है।''

बहुव्रीहि समास के पञ्च विधायक सूत्र है–''अनेकमन्यपदार्थे'', ''संख्ययाव्ययासन्नदूराधिक संख्या-संख्येये'', ''दिङ्नामान्यन्तराले'', ''तत्र तेनेदमिति सरुपे'', ''तेन सहेति तुल्ययोगे''। यहाँ पर पीताम्बरः, द्वित्राः, दक्षिणपूर्वा, हस्ताहस्ति, केशाकेशि, इत्यादि क्रमानुसार उदाहरण हैं। ''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपद लोपः'' ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपद लोपः'', ''सप्तम्युपमान पूर्वपदस्योत्तरपदलोपश्च'' ये वार्तिक बहुव्रीहि समास विधायक हैं।

बहुव्रीहि समास में पूर्वनिपात विधायक सूत्र ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'', ''निष्ठा'', ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' हैं। और यहाँ पर पूर्वनिपात के यथाक्रम-कण्ठेकालः, युस्तयोगः, अग्न्याहितः इत्यादि उदाहरण हैं।

बहुव्रीहि समास में ''समासान्ताः'' अधिकृत कुछ समासान्त प्रत्ययों का विधान है। और वे प्रत्यय ''तद्धिताः'' इस सूत्र के अधिकार बल से तद्धितसंज्ञक होती है। ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'', ''अन्तर्वहिर्भ्यां चे लोम्नः'' ये दो सूत्र अप् प्रत्यय विधायक हैं। इनके क्रमशः उदाहरण हैं– कल्याणी पञ्चमाः, अन्तर्लोमः। ''बहुव्रीहौ संख्येयेडजबहुगणात्'' यह डच् प्रत्यय विधायक सूत्र है। इसका उदाहरण ''उपदशाः'' है। ''इच्कर्मव्यतिहारे'' यह इच् प्रत्यय विधायक सूत्र है। केशाकेशि इत्यादि यहाँ उदाहरण हैं। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' यह षच् प्रत्यय विधायक सूत्र है। यहाँ उदाहरण है दीर्घसक्थः। ''द्वित्रिभ्यां स मूर्ध्नः'' यह ष प्रत्यय विधायक सूत्र है। द्विमूर्धः इत्यादि यहाँ उदाहरण है। ''उरः प्रभृतिभ्यःरूप्'' ''इनःस्त्रियाम्'' ''शेषाद्विभाषा'' ये तीन सूत्र कप् प्रत्यय विधायक हैं।

यहाँ पर व्यूढोरस्कः बहुदण्डिका, महायशस्कः इत्यादि उदाहरण है। समासान्त लोप विधान के लिए ''पदस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' ''संख्यासु पूर्वस्य'' ''उद्विभ्यां काकुदस्य'' ''पूर्णाद्विभाषा'' ये चार सूत्र पढ़े गये हैं। व्याघ्रपात्, द्विपात्, उत्काकुत्, पूर्णकाकुत् इत्यादि क्रमशः उदाहरण हैं।

(8.3.6) द्वन्द समास

''प्रायेण उभयपदार्थप्रधानः द्वन्दः'' यह द्वन्द समास का लक्षण है। उभयपद का अर्थ उभयपदार्थ है। समस्यमान पूर्वपद का और उत्तरपद का अर्थ उभयपदार्थ होता है। उभय पदार्थ प्रधान है जहाँ वह उभयपदार्थप्रधान है। इस समास में प्राय उभयपदार्थ का प्राद्यान्य दिखाई देते है। ''चार्थेद्वन्दः'' यह द्वन्दसमासविधायक सूत्र है। ''च'' अर्थ है–समुच्च्य, अन्वाचय, इतरेतरयोग समाहार। इनमें समुच्चय और अन्वाचय में असम अर्थ से समास नहीं होता है। एवं इतरेतरयोग और समाहार द्वन्दसमास दो प्रकार विभाजित किया जाता है।

इस समास का धवखदिरौ इत्यादि उदाहरण है। धवरवदिरौ यहाँ पर समस्यमान धव और खदिर पदों में अर्थ के प्राधान्यात् से यह उभयपदार्थ प्रधान द्वन्द समास है।

परन्तु दन्तोष्ठम् यहाँ उभयप्राधान्य का व्यभिचार है। ''चार्थेद्वन्दः'' इस सूत्र से दन्तः च ओष्ठः च तयोः समाहारः इस लौकिक विग्रह में समास होने पर दन्तोष्ठम् रूप निष्पन्न होता है। दन्तोष्ठम् यहाँ अन्य पदार्थ के समाहार की प्राधान्य है और उभय पदार्थ का प्राधान्य नहीं है। एवं कहा जाता है-''प्रायेण उभयपदार्थप्रधानद्वन्द''।

द्वन्द समास में पूर्वनिपात विधायक ''द्वन्दे धि'', ''अगाद्यन्तम्'' ''अल्पाच्तरम्'' ये सूत्र हैं। यहाँ पर हरिहरौ, ईशकृष्णौ, शिवकेशवौ इत्यादि क्रमशः उदाहरण हैं। इसके बाद पर निपात विधायक सूत्रों में ''राजदन्तादिषु परम्'' का उल्लेख है। उससे राजदन्तः इत्यादि सिद्ध होते हैं। ''धर्मादिष्वनियमः'' ''अनेकप्राप्तावेकत्र नियमोऽनियमः शेषे'' ''ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येण'' ''लघ्वक्षरं पूर्वम्'' ''अभ्यर्हितंच'' ''वर्णानामानुपूर्व्येण'' ''भ्रातुर्ज्यायसः'' इत्यादि पूर्वपर निपात बोधक वार्तिक है।

इसके बाद एक वद् भाव विधायक सूत्र हैं–''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'', ''जातिरप्राणिनाम्'', ''विप्रतिपिद्धं चानधिकरणवाचि'', ''येषां च विरोधः शाश्वतिकः'' इत्यादि हैं। यहाँ पाणिपदम्, धानाशष्कुनि, शीतोष्णम्, अहिनकुलम् इत्यादि उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-6

44. बहुव्रीहि समास का उदाहरण क्या है?
45. बहुव्रीहि समास लक्षण में प्रायेण क्यों लिया गया है।
46. बहुव्रीहि समासविधायक वार्तिक लिखो?
47. बहुव्रीहौ समासान्त अप्प्रत्यय विधायक सूत्र क्या है?
48. बहुव्रीहि में कौन-कौन से समासान्त प्रत्यय होते हैं?
49. समासान्तलोपविधायक सूत्र कौन से हैं? लिखो?
50. द्वन्द समास का लक्षण क्या हैं?

51. द्वन्द समास में लक्षण में प्रायेण पद क्यों लिया गया है?

52. द्वन्द समास में एकवद् भाव विधायक सूत्रों को लिखो?

53. द्वन्द समास में पूर्व निपात विधायक सूत्र लिखो?

54. द्वन्द समास में पूर्वपर निपात विधायक वार्तिक लिखो?

55. द्वन्द समास में समासान्त टच् प्रत्यय किस सूत्र से होता है?

पाठ सार

आदि सात पाठों में समासभेद वर्णित हैं। यहाँ तत्समासपर्यालोचन अवसर पर ही समासान्त कार्य विधायक निषेध सूत्रों का समुल्लेख विहित है। इस पाठ में सर्वसमास उपकारक समासान्त कार्य विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई है। तथाहि ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' इस समासान्त अप् प्रत्यय विधायक हैं। ''अच् प्रत्ययन्ववपूर्वात् लोम्नः'', ''अक्ष्णोऽदर्शनात्'' और ''उपसर्गादध्वनः'' अच् प्रत्यय विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई है। प्रसङ्गतः समासान्त निषेध सूत्र ''न पूजनात्'', ''किमःक्षेपे'', ''नञस्तत्पुरुषात्'' और ''पथोविभाषा'' समासान्त निषेध सूत्र प्रतिपादित हैं।

इसके बाद वृत्तिस्वरूप पर्यालोचित है। ''परार्थाभिधानं वृत्तिः'' यह वृत्ति लक्षण है। परार्थ का अभिधान परार्थाभिधान है। परार्थ नाम विग्रह वाक्य अवयव पदार्थों से परे जो अर्थ है वह परार्थ उसकी प्रतिपादिका वृत्ति है। वृत्ति के पाँच भेद होते हैं।

कृत्तद्धित, समास, सनाद्यत्त, एकशेष।

इसके बाद विग्रह स्वरूप प्रतिपादित किया गया है ''वृत्यार्थावबोधक वाक्य विग्रहः''। वृत्त्यर्थ का अवबोधक जो वाक्य है वही विग्रह है। और वह विग्रह दो प्रकार का होता है लौकिक और अलौकिक। यहाँ लौकिक विग्रह परिनिष्ठतः अर्थात् व्याकरण संस्कृत। लोक में व्याकरण से संस्कृतः पदों का प्रयोग होता है। अत एव ''परिनिष्ठितत्वात् साधुलौकिकः'' लौकिक विग्रह वाक्य का लक्षण हैं। अलौकिक नाम लोक में प्रयोग नहीं होता है। अर्थात् परिनिष्ठितत्वाभाव से जो विग्रह है उसका लोक में प्रयोग नहीं होता है वह अलौकिक विग्रह है। एवं ''प्रयोगानर्हः असाधुरलौकिकः'' यह अलौकिक विग्रह वाक्य का लक्षण है।

समास वृत्तियों में अन्यतम होता है। और समास सामान्यतः दो प्रकार का होता है नित्य और अनित्य। यहाँ अविग्रह अथवा अस्वपदविग्रह नित्य समास होता है। स्वपद विग्रह अनित्य समास होता है। समास के कितने भेद होते हैं यहाँ बहुत सी विप्रतिपत्तियाँ हैं। सामान्यतः समास के पाँच भेद हैं और वे हैं–केवल समास, अव्ययीभावसमास तत्पुरुष, बहुव्रीहि, और द्वन्द समास है। इसके बाद पूर्वपठित पाठों में केवल आदि पाँच समासों का कैसे परिशील सेहत किया गया है इस पाठ में प्रस्तुत किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे'' सूत्र की व्याख्या करो?
2. सर्वसमासान्त प्रत्यया: विषय आश्रित टिप्पणी लिखो?
3. समासान्त निषेधक विषय आश्रित टिप्पणी लिखो?
4. वृत्तिस्वरूप और उसके भेदों का वर्णन करो?
5. विग्रह स्वरूप और उसके भेदों का वर्णन कीजिये?
6. समास के कितने भेद होते हैं और उनके लक्षण क्या हैं?
7. अव्ययीभाव समास का विवेचन करो?
8. तत्पुरुष समास का विवेचन कीजिये?
9. द्वन्द समास का विवरण कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. समासान्त अ प्रत्यय।
2. ऋगाद्यन्त समास के अप्रत्यय का अन्तावयव होता है अक्षे या धू: तदन्त का नहीं होता है।
3. अर्धर्च:।
4. अनक्षे इस प्रतिषेध से अक्षशब्द से धुर् का समास में नहीं होता है।
5. सामासान्त अच् प्रत्यय होता है।
6. प्रत्यक्ववपूर्व से सामलोमन्त समास से समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।
7. प्रतिसामम्।
8. समासान्त अच् प्रत्यय होता है।
9. अचक्षु पर्याय से अक्ष्ण को समासान्त तद्धित संज्ञक अच् प्रत्यय होता है।
10. गवाक्ष:।

उत्तर-2

11. प्रादि से अध्वन समासान्त तद्धितसंज्ञक अच् प्रत्यय होता है।

टिप्पणियाँ

12. प्राध्वो रथः।

13. पूजन अर्थ से परे जो प्रातिपदिक तदन्त से समास से समासान्त नहीं होता है।

14. युराजा।

15. निन्दार्थ किं शब्द से पर जो प्रातिपदिक तदन्त समास से समासान्त नहीं होते हैं।

16. किंराजा।

17. नञ्तत्पुरुषसमास से समासान्त नहीं होते हैं।

18. अराजा।

19. पथि-शब्दान्त से नञ्तत्पुरुष समास से विकल्प से समासान्त नहीं होते हैं।

20. अपन्थाः।

21. ''परार्थाभिधानं वृत्तिः'' यह वृत्ति का लक्षण है।

22. पञ्च।

23. ''वृत्यर्थावबोधक वाक्यं विग्रहः'' यह विग्रह वाक्य का लक्षण है?

24. दौ में भेद।

25. परिनिष्ठितत्वात् साधुलौकिकः'' यह लौकिक विग्रह वाक्य लक्षण है। उदाहरणं- राज्ञः पुरुषः।

26. ''प्रयोगानर्हः असाधुरलौकिकः'' यह अलौकिक विग्रह वाक्य लक्षण है। उदाहरणः-राजन् ङस् पुरुष सु।

उत्तर-4

27. अविग्रह अथवा अस्वपद विग्रह नित्य समास है।

28. कृष्णसर्पः इस अविग्रह में, कुपुरुषः इस अस्वपद विग्रह में।

29. पञ्च।

30. अव्ययीभावादिविशेषसंज्ञाओं से विनियुक्त जो समास है वह केवल समास है।

31. विशेषसंज्ञा होती हैं–अव्ययीभाव, तत्पुरुषः, द्वन्दः और बहुव्रीहिः।

32. ''प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधान अव्ययीभावः'' यह अव्ययीभाव समास का लक्षण है।

33. वस्तुतः यहाँ मात्रार्थ का उत्तरपदार्थ का ही प्राधान्य है। और पूर्वपदार्थ का अप्रधान्य है। अत कहा जाता है प्रायेण पूर्व पदार्थ प्रधानः अव्ययी भावः।

34. ''अव्ययी भावेशरत्प्रसृतिभ्यः'', ''अनश्च'' ये दो सूत्र नित्य टच् प्रत्यय विधायक है। ''नपुंसकादन्यतरस्याम्'', ''झयः'' ये दो सूत्र विकल्प से टच् प्रत्यय विधायक है।

35. नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्या:, तृतीया और सप्तमी में बहुलम् होता है।

उत्तर-5

36. ''प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधान: तत्पुरुष:'' यह तत्पुरुष का लक्षण है।

37. ''अत्यादय: क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'' इस वार्तिक से ''मालामतिकान्त:'' इस लौकिक विग्रह में समास होने पर अतिमाल: रूप निष्पन्न होता है। अतिमाण: यहाँ पर अति अतिक्रान्तार्थ बोधक है। यहाँ पर अतिक्रान्तार्थ का पूर्वपदार्थ का ही प्राधान्य है और उत्तरपदार्थ का अप्राधान्य है। अत: कहा जाता है। ''प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधान: तत्पुरुष:''।

38. व्यधिकरणतत्पुरुष का द्वितीयातत्पुरुष, तृतीयातत्पुरुष, चतुर्थीतत्पुरुष, पञ्चमीतत्पुरुष, षष्ठीतत्पुरुष और सप्तमीतत्पुरुष थे छ: भेद होते हैं।

37. कर्मधारयसंज्ञा, ''तत्पुरुष: समानाधिकरण: कर्मधारय:'' इस सूत्र से होता है।

40. संख्यापूर्व तत्पुरुष समासको द्विगु संज्ञा प्राप्त होती है। प्रमाणभूत सूत्र है–''संख्या पूर्वो द्विगु:''।

41. प्रादि समास के विधायक पाँच वार्तिकों का यहाँ उल्लेख किया गया है ''प्रादयोगताद्यर्थे प्रथमया'', ''अत्यादय: क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'', ''अवादय: क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'', ''पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या'' ''निरादय: क्रात्ताद्यर्थे पञ्चम्या''।

42. ''तत्पुरुषस्याङ्गुले: संख्याव्ययादे:'' और ''अह: सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रे:'' ये दो सूत्र उल्लेखित हैं।

43. ''राजाह: सखिभ्यष्टच्'' सूत्र से।

उत्तर-6

44. ''प्रायेण अन्य पदार्थ प्रधान: बहुव्रीहि:'' यह बहुव्रीहि समास का लक्षण है।

45. द्वित्रा: यहाँ उभयपदार्थ का प्राधान्य है और अन्य पदार्थ का प्राधान्य भाव। अत: कहा जाता है'' प्रायेण अन्य पदार्थ प्रधान: बहुव्रीहि:''।

46. ''प्रादिभ्योधातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोप:'' ''नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा चोत्तरपदलोप:'', ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्योत्तर पदलोपश्च'' ये वार्तिक बहुव्रीहि विधायक हैं।

47. ''अप्पूरणीप्रमाल्यो:'' ''अन्थर्बहिर्ज्यां च लोम्न:'' ये दो सूत्र अप् प्रत्यय विधायक हैं।

48. अप्, इच्, डच्, षच्, कप्, ये समासान्त पाँच प्रत्यय हैं।

49. समासान्त लोप विधान के लिए ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्य:'' ''संख्यासुपूर्वस्थ'', ''उद्विभ्यांकाकुदस्य'', ''पूर्णाद्विभाषा'' ये चार सूत्र पढ़े गये हैं।

50. ''प्रायेण उभयपदार्थप्रधान: द्वन्द:'' यह द्वन्द समास का लक्षण है।

टिप्पणियाँ

51. दन्तोष्ठम् यहाँ अन्यपदार्थ के समाहार का प्राधान्य है, उभय पदार्थ का प्राधान्य नहीं हैं।

52. ''द्वन्दश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्'', ''जातिरप्राणिनाम्'', ''विप्रतिषिद्धं चानाधिकरण वाचि'', ''येषां च विरोधः शाश्वतिकः'' इत्यादि सूत्र हैं।

53. ''द्वन्देधि'', ''अजाद्यन्तम्'', ''अल्पाञ्तरम्'' ये सूत्र हैं।

54. ''धर्मादिष्वनियमः'', ''अनेक प्राप्तवेकत्र नियमोऽनियमः शेषे'' ''ऋतुनक्षत्राणां समाक्षराणामानुपूर्व्येण'', ''लध्वक्षरं पूर्वम्'', ''अभ्यर्हितं च'', ''वर्णानामानुपूर्व्येण'', ''भ्रातुर्ज्यायसः'' इत्यादि पूर्वपद निपात बोधक वार्तिक हैं।

55. ''द्वन्दाच्चुदषहान्तात्समाहारे'' सूत्र से।

अष्टमः पाठ समाप्त